दुर्खीम का समाजशास्त्रीय पद्धतिशास्त्र

वन्दना
असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग
बी0एस0एन0वी0 पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ–226001, उ0प्र0, भारत
vandana7620@gmail.com

प्राप्त तिथि–03.06.2015, स्वीकृत तिथि–28.06.2015

फ्रांसीसी समाजशास्त्री इमाईल दुर्खीम समाजशास्त्र जगत में, समाजशास्त्र के जन्मदाता काम्ट के उत्तराधिकारी के रूप में प्रतिष्ठित हैं। समाजशास्त्रीय अध्ययन पद्धति एवं सिद्धान्तों को एक निश्चित वैज्ञानिक स्तर पर ले जाने में इनका स्थान अप्रतिम है। काम्ट और दुर्खीम के बौद्धिक विकास की पार्श्वभूमि में बड़ी समानता है। फ्रान्स की राजक्रान्ति के बाद की सामाजिक परिस्थितियों ने काम्ट के चिंतन को प्रभावित किया। सन् 1870 के फ्रान्स और जर्मनी के युद्ध तथा इससे फ्रान्स की पराजय दुर्खीम के समाजशास्त्र को प्रभावित करती है। सन् 1895 में प्रकाशित दुर्खीम की प्रसिद्ध पुस्तक "द रूल्स ऑफ सोशियोलॉजिकल मेथड" के अन्तर्गत समाजशास्त्र को एक सकारात्मक विज्ञान के रूप में स्थापित करने का कार्य प्रारम्भ हुआ।

दुर्खीम का पद्धति शास्त्र– दुर्खीम ने अपनी पुस्तक "द रूल्स ऑफ सोशियालोजिकल मेथड" में सामाजिक घटनाओं के अध्ययन में वैज्ञानिक प्रविधियों का प्रयोग किया है ।

"समाजशास्त्र के जन्मदाता काम्ट एक समर्पित सकारात्मकतावादी थे किन्तु समाजशास्त्र विषय में सकारात्मक पद्धति के प्रतिष्ठाता दुर्खीम ही माने जाते हैं। समाज विज्ञान में प्रयोग की जाने वाली सकारात्मक धारणायें इस प्रकार हैं–
1. प्राकृतिक विज्ञानों में प्रचलित पद्धतियों एवं धारणाओं को मानव समाज के अध्ययन के लिए प्रत्यक्षतः प्रयुक्त किया जा सकता है।
2. समाज विज्ञानों में होने वाले अनुसंधान कार्यकारी नियमों में घटित किये जा सकते हैं तथा अनुसंधान का उद्देश्य नियमों का निर्माण तथा समाज के नियमों जैसे– सामान्यीकरण विकसित करना है।
3. सामाजिक अनुसंधान ऐसे प्राविधिक ज्ञान का विकास करने में सक्षम है जो पद्धति में सहायक हो परन्तु सामाजिक मूल्यों के प्रति तटस्थ हो।"

दुर्खीम का मानना था कि सामान्य समाजशास्त्र विशेष विज्ञानों का समन्वय हो सकता है क्योंकि यह उनके सर्वाधिक सामान्यीकृत परिणामों में निहित है। समाजशास्त्र के समन्वयात्मक एवं विशिष्टात्मक दृष्टिकोण को सम्मिलित करते हुए एक सामान्य दृष्टिकोण विकसित किया। दुर्खीम ने समाजशास्त्र को प्राकृतिक विज्ञानों से कहीं अधिक जटिल माना है। अन्य सामाजिक विज्ञानों से भी पृथक समाजशास्त्र का अपना स्वतन्त्र क्षेत्र है। मनुष्य द्वारा अनेक तरह की सम्पन्न की जाने वाली क्रियायें अन्य सामाजिक विज्ञानों के विषय क्षेत्र के अन्तर्गत आती हैं। समाज में रहते हुए व्यक्ति कुछ क्रियायें स्वयं सम्पन्न करता है किन्तु उसका आधार व्यक्तिगत न होकर सामाजिक अर्थात् ऐसी परिस्थितियाँ उसे विशिष्ट क्रियायें करने के लिए प्रेरित एवं बाध्य करती हैं। समाज में कानून, धर्म, नीति, प्रथा, रूढ़ियाँ आदि तथ्य सामूहिकता से उत्पन्न वास्तविकतायें हैं जिसके कारण व्यक्ति अपनी मनोवैज्ञानिक व्यक्तिगत विशेषताओं से प्रभावित होकर कार्य नहीं करता जितना कि समूह से। दुर्खीम ने अपनी आत्महत्या के सिद्धांत के अन्तर्गत आत्महत्या और उसके सामाजिक पक्ष के अध्ययन पर बल दिया है। एक से अधिक व्यक्ति और एक से अधिक समय पर होने वाला व्यवहार व्यक्तिगत न रहकर सामूहिक हो जाता है, आत्महत्या के सामूहिक पक्ष की माप की जा सकती है। उदाहरण के लिए यदि एक साल में 120 आत्महत्याएं हुई, अगले साल 125 व तीसरे साल 128 तो अब हम कह सकते हैं कि आत्महत्या उक्त समाज में 120–128 के बीच प्रतिवर्ष हो रही हैं इसी तरह से हम आज कल जन्मदर, मृत्युदर, स्वास्थ्य कल्याणकारी सेवाओं से सम्बन्धित प्रतिशत को देखकर विभिन्न सामाजिक तत्वों की समय एवं समाज के अनुसार तुलना कर निष्कर्ष निकालते हैं। दुर्खीम ने समाजशास्त्र के विषय वस्तु के अन्तर्गत समूह की क्रियाओं, प्रक्रियाओं को सम्मिलित किया है। सामूहिक व्यवहार या सामूहिक प्रेरणा से व्यक्ति जो क्रियायें करता है वे समाजशास्त्र के अध्ययन क्षेत्र मे आता है ।

दुर्खीम के पद्धतिशास्त्र के अध्ययन का लक्ष्य

1. दुर्खीम के पद्धतिशास्त्र के अध्ययन का लक्ष्य अपने इस विषय को विज्ञान बनाना ।
2. इस नवीन विज्ञान में वैज्ञानिक प्रविधियों का प्रयोग करना ।

दुर्खीम ने समाजशास्त्रीय चिंतन के क्षेत्र में सामाजिक घटना का अध्ययन आगमन पद्धति से करने की अपेक्षा सामाजिक तथ्यों का निरीक्षण व परीक्षण करके पूर्ण वस्तुनिष्ठता के साथ ऐसे नियमों को खोज निकालना था जो सामूहिक जीवन को संचालित करते हैं। दुर्खीम ने समाजशास्त्र की अध्ययन पद्धति, विषयवस्तु की दृष्टि से एक स्वतन्त्र विज्ञान के रूप में प्रतिष्ठित किया। समाजशास्त्रीय अध्ययन में सामूहिक क्रिया, व्यवहारों को सम्मिलित करते हुए एक नई समूहवादी परम्परा को जन्म दिया । दुर्खीम ने समाजशास्त्रीय अध्ययन पद्धति के द्वारा सामाजिक तथ्यों के अध्ययन पर बल दिया।

दुर्खीम के पद्धति शास्त्र की विशेषताएं– सामाजिक तथ्य, काम करने, और महसूस करने की ऐसी पद्धति है जिसका अस्तित्व व्यक्ति की चेतना के बाहर है। सामाजिक तथ्य की दो विशेषतायें हैं– 1. बाह्यता, 2. बाध्यता। सामाजिक तथ्य व्यक्ति के मस्तिष्क और उसकी चेतना के बाहर की उपज है जिसके निर्देशों के पालन के लिए हम बाध्य हैं तथा नियमों के भंग करने पर समाज विरोधी प्रतिक्रिया के रूप में दण्ड की व्यवस्था करता है। दुर्खीम ने समाजशास्त्रीय अध्ययन के लिए श्रम विभाजन, सामाजिक एकता, कानून नैतिकता, धर्म, आत्महत्या, शिक्षा, व्यवसायिक पेशेवर समूह, आर्थिक सामाजिक संगठन आदि सामाजिक तथ्यों को महत्वपूर्ण माना है। दुर्खीम के अनुसार समूह की सत्ता व्यक्ति की सत्ता से ऊपर है। सामाजिक घटनायें व्यक्तिगत प्रेरणाओं से नहीं अपितु सामूहिक मन अर्थात सामूहिक चेतना द्वारा संचालित होती हैं। दुर्खीम के अनुसार सामाजिक तथ्यों के अवलोकन, परीक्षण, प्रणालियों के आधार, प्रयोग पर आधारित ज्ञान ही समाजशास्त्र का अन्तिम लक्ष्य है। सामाजिक तथ्यों के अध्ययन के हर स्तर पर आदर्शात्मक प्रतिमानों वैयक्तिक भावनाओं से बचते हुए तटस्थ व वैज्ञानिक भावना, निरीक्षण, परीक्षण द्वारा वास्तविक तथ्यों को खोजा जाता है। दुर्खीम का मानना है कि सामाजिक तथ्यों का अध्ययन कार्य–कारण सम्बन्धों के आधार पर होना चाहिए, एक सामाजिक घटना दूसरे सामाजिक घटना को जन्म देने, प्रभावित करने, या किसी न किसी प्रकार से सम्बन्धित रहता है। प्रत्येक सामाजिक तथ्य अपने पूर्ववर्ती सामाजिक तथ्यों का परिणाम होता है। समाजशास्त्रीय अध्ययनों में दुर्खीम ने ऐतिहासिक पद्धति की जगह सहगामी रूपान्तर पद्धति(Method of concomitant variations) को अपनाते हैं जो तुलनात्मक पद्धति का एक रूप है। सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्ष निरन्तर क्रियाशील एवं परिवर्तनशील होते हैं किन्तु सभी कारकों की क्रियाशीलता, परिवर्तनशीलता की गति एक जैसी नहीं पाई जाती है। सहगामी रूपान्तर पद्धति से विभिन्न कारकों के आपसी सम्बन्धों का अनुपात निकालने से विभिन्न सामाजिक तथ्यों के आपसी सम्बन्धों का पता लगा लिया जाता है। साथ ही साथ सामाजिक घटना के निर्धारण में कारकों के योगदान का वास्तविक रूप में पता चल जाता है। **उदाहरणार्थ–** आधुनिक समाज में युवावर्ग, परिवार एवं विवाह के प्रति बदलते दृष्टिकोण के प्रति विभिन्न कारकों जैसे शिक्षा, मूल्यों के प्रति बदलाव, तार्किकता, पश्चिमीकरण, नगरीकरण, लौकिकीकरण आदि कारक उत्तरदायी हैं।

निष्कर्ष– दुर्खीम ने समाजशास्त्रीय अध्ययन को सामाजिक उपादेयता के लिए जरूरी माना है। समाजशास्त्र को वैज्ञानिक निरीक्षण के आधार पर ऐसे सामाजिक उद्देश्यों की खोज करना है जो समाज के लिए उपयोगी हों। दुर्खीम के उपरोक्त पद्धतिशास्त्रीय विवेचना से स्पष्ट होता है कि दुर्खीम सामाजिक तथ्यों को वस्तुओं के समान निरीक्षण योग्य पदार्थो के रूप में स्वीकार करते हुए सामाजिक तथ्यों के अध्ययन में कार्य–कारण सम्बन्धों के अध्ययन में सहगामी रूपान्तर पद्धति को अपनाने पर बल देते हैं। समाजशास्त्र को वैज्ञानिक स्तर पर ले जाने हेतु प्राकृतिक विज्ञानों में प्रयुक्त प्रणालियों को समाजशास्त्र में अपनाने पर जोर देते हैं ।

सन्दर्भ

1. ब्रजराज, चौहान(1994) समाज विज्ञान के प्रेरक श्रोत, ए0सी0 ब्रदर्स, उदयपुर, पृ0 155।
2. "द स्टडी ऑफ सोसाइटी", इग्नू ई0एस0ओ0–2005, पृ0 14।
3. गुप्ता, एम0एल0 एवं शर्मा, डी0 डी0(1998) समाजशास्त्र, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, पृ0 20।
4. वर्मा, ओम प्रकाश(1995) दुर्खीम–एक अध्ययन, विवेक प्रकाशन, जवाहरनगर, दिल्ली, पृ0–22।
5. सिंह, जे0 पी0(2010) समाजशास्त्र, अवधारणायें एवं सिद्धान्त, पी0एच0आई0 लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, पृ0–11।